Theory of Moral Development
(नैतिक विकास का सिद्धान्त)
Jean Piaget's Theory of Moral Development)
(जीन पियाजे का नैतिक विकास का सिद्धान्त)

संज्ञानात्मक-विकासात्मक (cognitive-developmental) :- सिद्धान्तवादियों का मत है कि नैतिक विकास सतत न होकर विभिन्न चरणो या अवस्थाओं में होता है। इस समूह के अन्तर्गत दो तरह के मनोवैज्ञानिकों के सिद्धान्तों को रखते हैं :-

जीन पियाजे का सिद्धान्त (Jean Piaget's Theory)

लॉरेज कोहवर्ग का सिद्धान्त (Lawrence Kohlberg's Theory)

जीन पियाजे (Jean Piaget), जो कि स्वीट्जरलैण्ड के एक मनोवैज्ञानिक ने नैतिक विकास का वैज्ञानिक अध्ययन 1928 से प्रारंभ किया। 1932 में उनकी मशहूर पुस्तक "The Moral Judgement of Child" का प्रकाशन हुआ। पियाजे का मत था कि बच्चों के नैतिक निर्णय के विकास में एक निश्चित क्रम एवं तार्किक पैटर्न होता है। यह विकास क्रमिक परिवर्तन जो बच्चों के बौद्धिक विकास से सम्बद्ध होता है, पर आधारित होते हैं।

पियाजे ने बच्चों को अपने नैतिक विकास में एक सक्रिय सहभागी पाया। वे इस सिलसिले में वातावरण के साथ बच्चों में होने वाले गतिशील अंतक्रिया पर अधिक बल डालते थे। उनका मत था कि जैसै-जैसे बच्चे अपने को वातावरण के साथ अन्ताक्रिया करते है, उन्हें परिवर्तित करते है तथा उनमें कुछ परिमार्जन लाते हैं, उनमें नैतिक विकास होता है। इस प्रकार पियाजे ने नैतिक विकास में बच्चों का सक्रिय सहभागी माना है। उनका विचार सामाजिक-अधिगम सिद्धान्त के नैतिक विकास में बच्चों को पर्यायवरणीय बलों का निष्क्रिय प्रापक माना गया है जो उन बलो के प्रभावों से प्रभावित होकर अपने में पर्याप्त परिवर्तन लाकर नैतिक विकास की ओर उन्मुख होता है।

पियाजे का यह सिद्धान्त नैतिक समस्याओं से सम्बन्धित बच्चों के सामने उपस्थित किए गए युग्मित कथाओं पर आधारित था।

पियाजे ने नैतिक विकास के सिद्धान्त में दो अवस्थाएँ होती है :-

नैतिक विकास की अवस्थाएँ
(Stages of Moral Development)

परायक्त नैतिकता की अवस्था	स्वायक्त नैतिकता की अवस्था
(Stage of Heteronomous morality)	(Stage of autonomous morality)
उम्र :- 2 वर्ष - 8 वर्ष	उम्र :- 9-11 वर्ष
इसे नैतिक वास्तविकता की अवस्था	तर्कसंगतता (Rationality)
(Stage of moral realism) या	लचीलापन (flexibility)
दबाव की नैतिकता का अवस्था	(Social consciousness)
(Stage of morality of constraint)	(Social consciousness)
भी कहते हैं।	की विशेषता

(क) परायक्त नैतिकता की अवस्था (Stages of Heteronomus morality) :- इस नैतिक वास्तविकता की अवस्था (Stage of moral realism) भी कहते हैं। नैतिक विकास की यह पहली अवस्था है जिसमें होकर प्रायः सभी बच्चे गुजरते है। यह अवस्था दो वर्ष से लेकर 8 वर्ष की आयु की अवस्था है। इस अवस्था की शुरूआत बच्चो एवं व्यस्कों में असमान अंतक्रिया से होती है। इस अवस्था में प्राक स्कूली अवस्था तथा आरंभिक स्कूल साल दोनो ही सम्मिलित रहते हैं। इस अवस्था में बच्चे (authoritarian environment) में डूबे हुए होते हैं। जिसमें उनका स्थान निश्चित रूप से वयस्क से घटिया या नीचे होता है।

इस अवस्था में बच्चे जो नैतिक नियम का जो सत्प्रत्यय विकसित करते है वह निरपेक्ष, अपरिवर्तनशील, तथा दृढ़ होता है। शायद यही कारण है कि इस अवस्था को नैतिक वास्ततिकता की अवस्था या दबाव की नेतिकता की अवस्था भी कहा जाता है। इस अवस्था में बच्चे यह समझते हैं कि कोई भी नियम बाह्य प्राधिकार, जैसे माता-पिता की ओर से आते हैं। जिसे हर हाल में उन्हें स्वीकार करना होता है। और यह नियम निर्विवाद होते हैं तथा समय के साथ परिवर्तनशील नहीं है अर्थात् वे आज भी रहेंगे और कल भी रहेंगे। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि इस अवस्था में पूर्णरूपेण नैतिक निरपेक्षवाद बना रहता है। बच्चे यह भी समझते हें कि इन नियमों में किसी भी तरह के विचलन से उन्हें सख्त से सख्त दंड दिया जायेगा अतः उन्हें आवश्यक है कि वो इन नियमों का पालन करे।

(ख) स्वायक्त नैतिकता की अवस्था (Stage of autonomus morality) :- यह अवस्था बच्चों में 9-11 साल की आयु से प्रारंभ होती है। जहाँ परायक्त नैतिकता बच्चों तथा वयस्कों के बची असमान सम्बन्ध से उत्पन्न होती है, वही स्वायक्त नैतिकता बच्चों के समान स्तर के लोगों अर्थात् संगी-साथी में बची सम्बन्धों से उपजती है। इस दंग का सम्बन्ध जब सामान्य बौद्धिक वर्धन वयस्कों के दबाव में सभी के साथ संयोजित होती है तो इसमें बच्चों में एक विशेष तरह की नैतिकता विकसित होती है जिसमें अन्य बातों के अलावा तर्मसंगतता, लचीलापन तथा समाजिक चेनता की विशेषता होती है। अपने संगी-साथियों के सम्बन्धों के माध्यम से बच्चों में न्याय का ऐसा ज्ञान विकसित होता है कि जिसमें दूसरो के अधिकारी की चिंता तथा मानवसम्बन्ध में समानता तथा पारम्पिरकता दिखलाई जाती है। पियाजे स्वायक्त नैतिकता को प्रजातंत्रात्मक तथा समतावादी मानते है। यह अवस्था परस्तर आदर तथा सहयोग पर आधारित रहती है।

इस अवस्था में बच्चा यह समझने लगता है कि समाजिक नियम एक मनमाना होता है। जिसपर प्रश्न उठाया जा सकता है।

प्राधिकारी (authority) के प्रति अनुपालन दिखाना ना तो आवश्यक है और ना ही वांछनीय है।

परायक्त तथा स्वायक्त अवस्थाओं में अन्तर

(Differences between Hetronomus & Autonomous morality)

Hetronomus morality stage परायक्त नैतिकता की अवस्था	Autonomus moraiyt stage स्वायक्त नैतिकता की अवस्था
बच्चे यह अनुभव करते हैं कि नियम समय सभी समय में तथा सभी जगह समान होते है।	इस अवस्था में बच्चे मानते है कि नियम हमेशा मानना जरूरी नहीं है तथा इसपर प्रश्न उठाया जा सकता है।
नियमों में परिवर्त्तन लाना असंभव	नियमों में परिवर्त्तन संभव है।
इस अवस्था में बच्चे सर्वव्यापी न्याय में विश्वास रखते है अर्थात् गलत करने पर ईश्वर दण्ड देगा यदि किसी ने किसी ने किसी का कोई समान चुराया है और वह सीढ़ी से गिर गया तो बच्चा सोचता है कि ईश्वर ने न्याय किया	परन्तु इस अवस्था में इस तरह का विश्वास नहीं होता है वह यह समझता है कि वह सीढ़ी से इसलिए गिरा क्योंकि उसने सावधानी नहीं रखी

परायक्त अवस्था में बच्चा किसी व्यवहार का मूल्यांकन उसके परिणाम के आधार पर भरता है। अर्थात् करने वाले के नीयत के आधार पर नहीं।

जबकि स्वायक्त अवस्था में बच्चे किसी व्यवहार का मूल्यांकन व्यक्ति के नीयत के आधार पर करता है।

पियाजे के नैतिक विकास सिद्धान्त की परिसीमाएँ

(Limitations of Piaget's theory of Moraliy)

पियाजे के नैतिक विकास के सिद्धान्त की कुछ परिसीमाएँ है जो इस प्रकार से है :-

(1) पियाजे का यह दावा था कि नैतिक विकास की एक अवस्था से दूसरी अवस्था में एक निश्चित तथा अपरिवर्त्य क्रम में प्रवेश करती है अर्थात् बच्चा परायक्त अवस्था से स्वायक्त अवस्था में एक निश्चित उम्र पर क्रमबद्ध ढंग से प्रवेश करता है परन्तु यह तथ्य क्रॉस सांस्कृतिक अध्ययन के परिणाम में समर्थन नहीं कर पाया।

ऐसा परिणाम से यह स्पष्ट है कि सांस्कृतिक कारणों से पियाजे द्वारा प्रस्ताविक नैतिक नियमों के क्रम में परिवर्त्तन हो सकता है।

(2) हलॉकि पियाजे द्वारा बतलाये गये सामान्य विकासात्मक क्रम को कई अध्ययन में आम समर्थन मिला है, नीवनतम शोधो से यह स्पष्ट हुआ है कि पियाजे ने छोटे बच्चों के संज्ञानात्मक क्षमताओं का न्यूनात्कुलन किया है।

चाइंलर, ग्रीनस्पैन तथा बारेनबोइम (1973) ने अपने अध्ययन में यह पाया कि छह साल के बच्चे भी दूसरे व्यक्ति के नीयत को समझने में सफल हो पाते हैं यदि बातें उनके सामने इस ढंग से रखी जाये जिसे वह समझ सके। अत: पियाजे का यह दावा कि छह साल के बच्चे जो नैतिक विकास की परायक्त अवस्था में रहते हैं, दूसरों के नीयत या इरादा को समझने में असमर्थ रहते हैं, उचित नहीं दिखता है।

(3) मौटे तौर पर देखा जाए तो पियाजे के नैतिक विकास के सिद्धान्त में दो कारकों अर्थात् नीयत तथा परिणाम पर अधिक बल डाला है। परन्तु आधुनिक शोधों द्वारा यह स्पष्ट हे कि इन दोनों कारकों के अलावा में कई और कारक होते हैं जिनका प्रभाव नैतिक विकास पर पड़ता है।

इन आलोचनाओं के बावजूद पियाजे का नैतिक विकास का सिद्धान्त अपने क्षेत्र में एक अग्रणी सिद्धान्त है तथा अन्य सिद्धान्तों पर इस सिद्धान्त का स्पष्ट छाप दिखता है।

◆◆◆◆◆